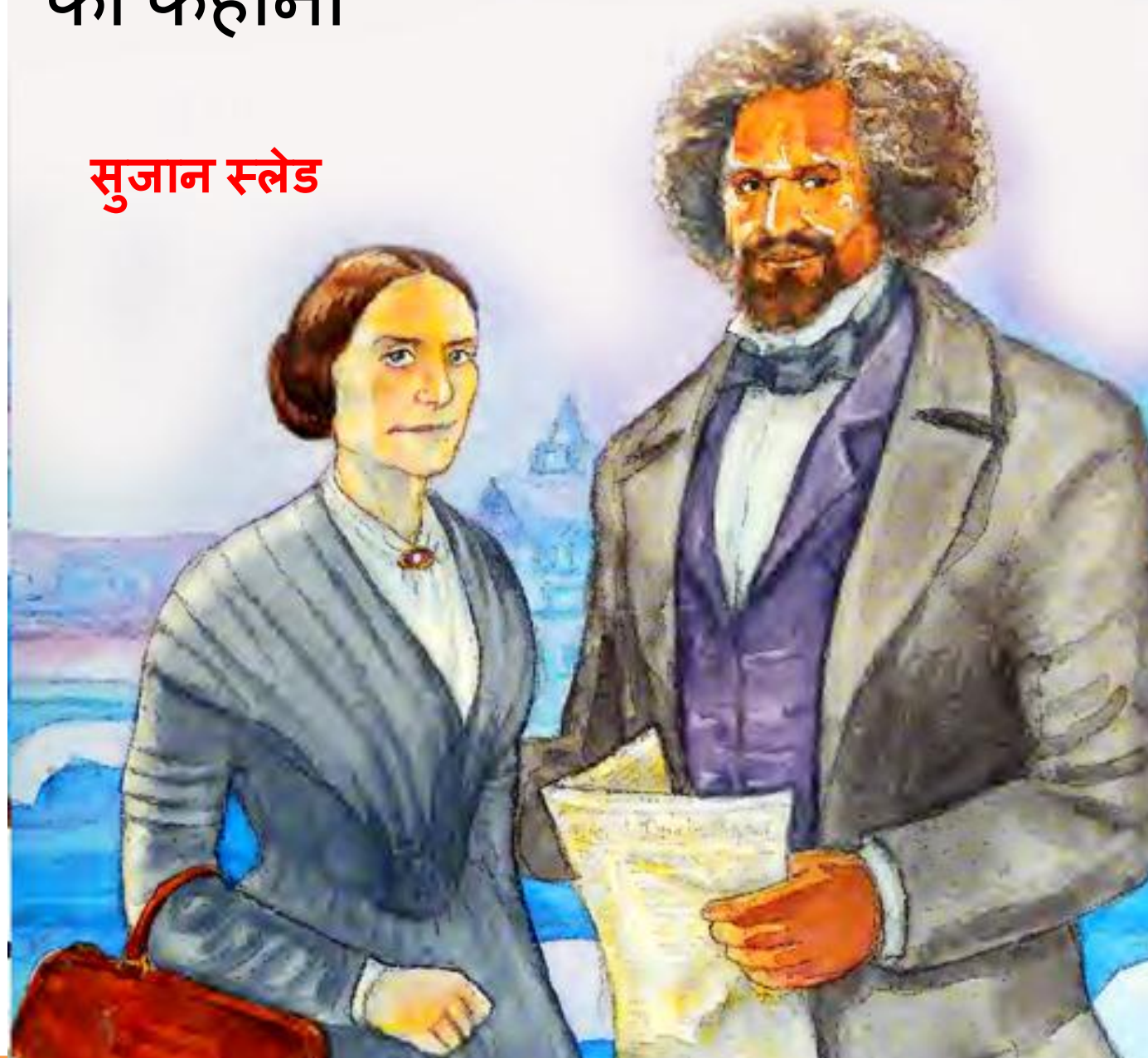


स्वतंत्रता के लिए दोस्त

सुसान एंथोनी और फ्रेडरिक डगलस

की कहानी

सुजान स्लेड



स्वतंत्रता के लिए दोस्त

किसी ने नहीं सोचा था कि सुसान और फ्रेडरिक कभी दोस्त बनेंगे.

उस समय, पुरुष और महिला आपस में दोस्त नहीं बन सकते थे. आपको किसी ऐसे व्यक्ति के साथ नहीं घूम सकते थे जिसकी त्वचा का रंग आपकी त्वचा के रंग से अलग हो.

लेकिन सुसान और फ्रेडरिक जानते थे कि ये विचार एकदम गलत थे. वे दोनों अंदर से एक-जैसे थे: वे दोनों मानते थे कि सभी लोगों के साथ एक जैसा व्यवहार किया जाना चाहिए. इसलिए दोनों दोस्तों ने एक-साथ, समान अधिकारों के लिए लड़ने का फैसला किया. और जब गुस्साई भीड़ इकट्ठी हुई, उनपर सड़े अंडे फेंके गए, और लोगों ने उनपर हमला किया तब भी वे दोस्त बने रहे.

उनकी दोस्ती पैंतालीस साल से अधिक चली. इस शाश्वत दोस्ती ने अमेरिका को बदलने में मदद की.

सुसान एंथोनी और फ्रेडरिक डगलस की कहानी



"भूल जाओ कि दुनिया क्या कहेगी... अपने सर्वोत्तम
विचार सोचो, अपने सर्वोत्तम शब्द बोलो, अपना
सर्वश्रेष्ठ काम करो."

-सुसान बी. एंथोनी



"मैं सही काम के लिए हरेक का साथ दूंगा और
गलत काम के लिए सबका विरोध करूंगा."

—फ्रेडरिक डगलस



किसी ने नहीं सोचा था कि सुसान और फ्रेडरिक कभी दोस्त बनेंगे.





सुसान बी. एंथनी का जन्म एक दो मंजिले घर में हुआ था जहाँ पर लकड़ी का पॉलिश वाला फर्श था.

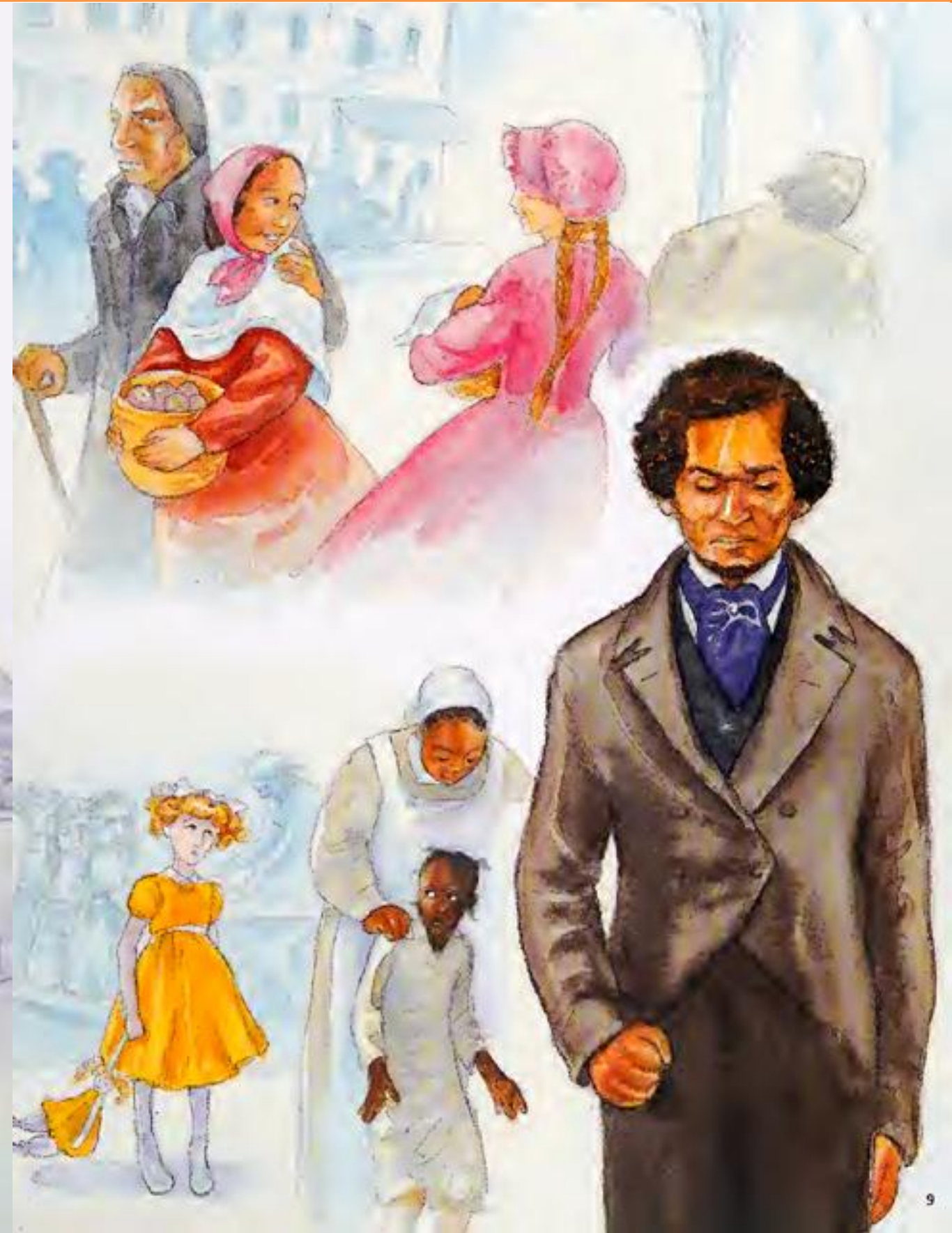
फ्रेडरिक डगलस का जन्म मिट्टी के फर्श पर एक कमरे वाले गुलामों के केबिन में हुआ था. सुसान के माता-पिता ने उसे स्कूल शुरू करने से पहले ही पढ़ना सिखाया था. फ्रेडरिक ने चुपके से खुद को पढ़ना सिखाया क्योंकि उस समय गुलामों को स्कूल जाने की अनुमति नहीं थी.

सुसान अपना दिन माँ की मदद — बेकिंग, सिलाई और बागवानी करने में बिताती थी. फ्रेडरिक पूरे दिन अपने मालिक की आज्ञा का पालन करता — वो कटाई, जुताई करता और खेतों में बीज बोता था.

जब सुसान और फ्रेडरिक बड़े हो रहे थे, तब अमेरिका भी जवां राष्ट्र बन रहा था. उस युवा देश में दोस्ती को लेकर कुछ अजीब विचार थे.

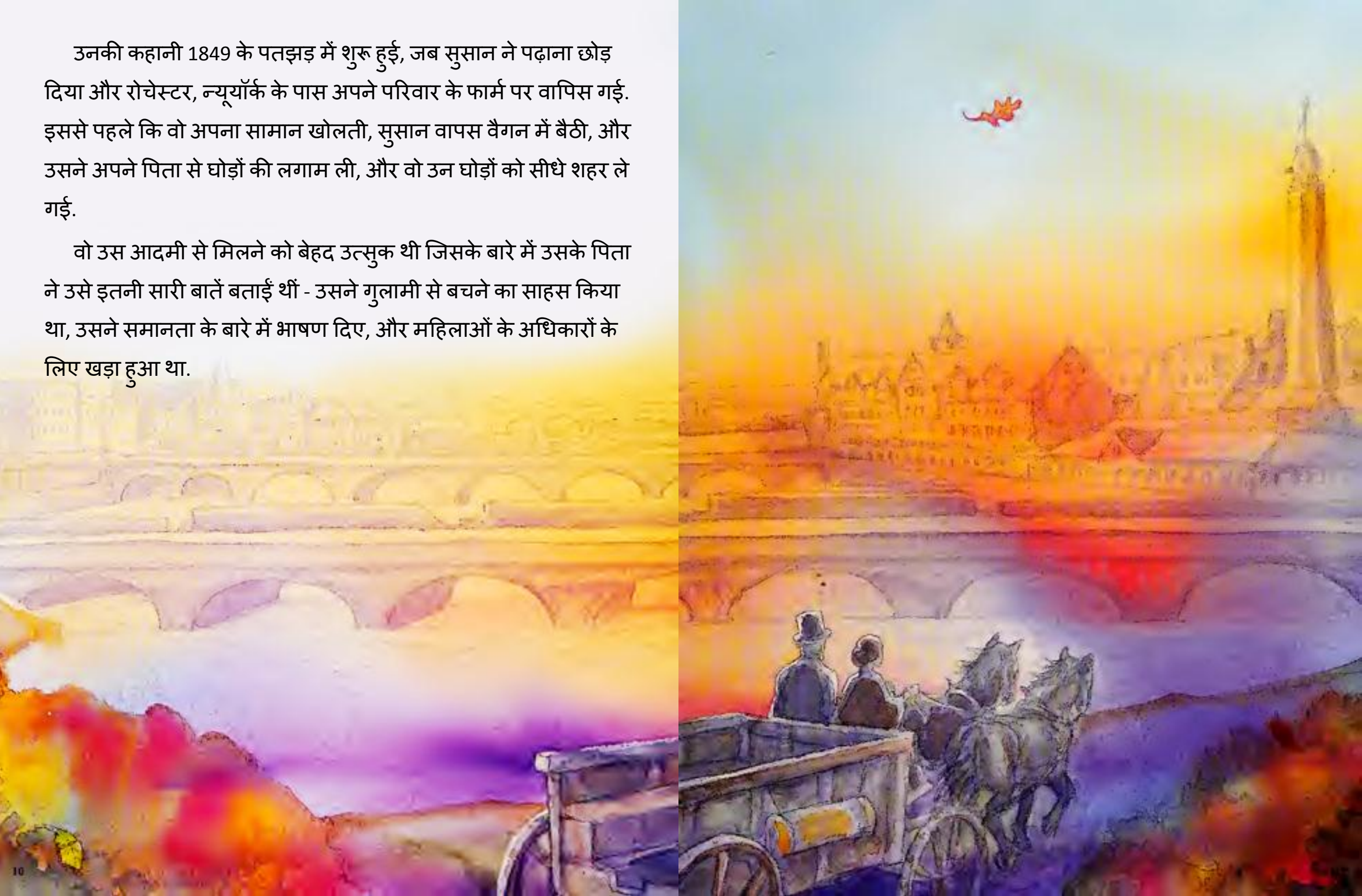
महिलाओं और पुरुषों की एक-साथ दोस्ती को उचित नहीं माना जाता था. आपको किसी ऐसे व्यक्ति से दोस्ती नहीं कर सकते थे जिसकी त्वचा का रंग आपकी त्वचा के रंग से अलग होता.

लेकिन सुसान और फ्रेडरिक को ये विचार गलत लगते थे. और जब वे बड़े हुए, तब उन्होंने अमेरिका को भी बेहतर बनने में मदद की.



उनकी कहानी 1849 के पतझड़ में शुरू हुई, जब सुसान ने पढ़ाना छोड़ दिया और रोचेस्टर, न्यूयॉर्क के पास अपने परिवार के फार्म पर वापिस गईं. इससे पहले कि वो अपना सामान खोलती, सुसान वापस वैगन में बैठी, और उसने अपने पिता से घोड़ों की लगाम ली, और वो उन घोड़ों को सीधे शहर ले गईं.

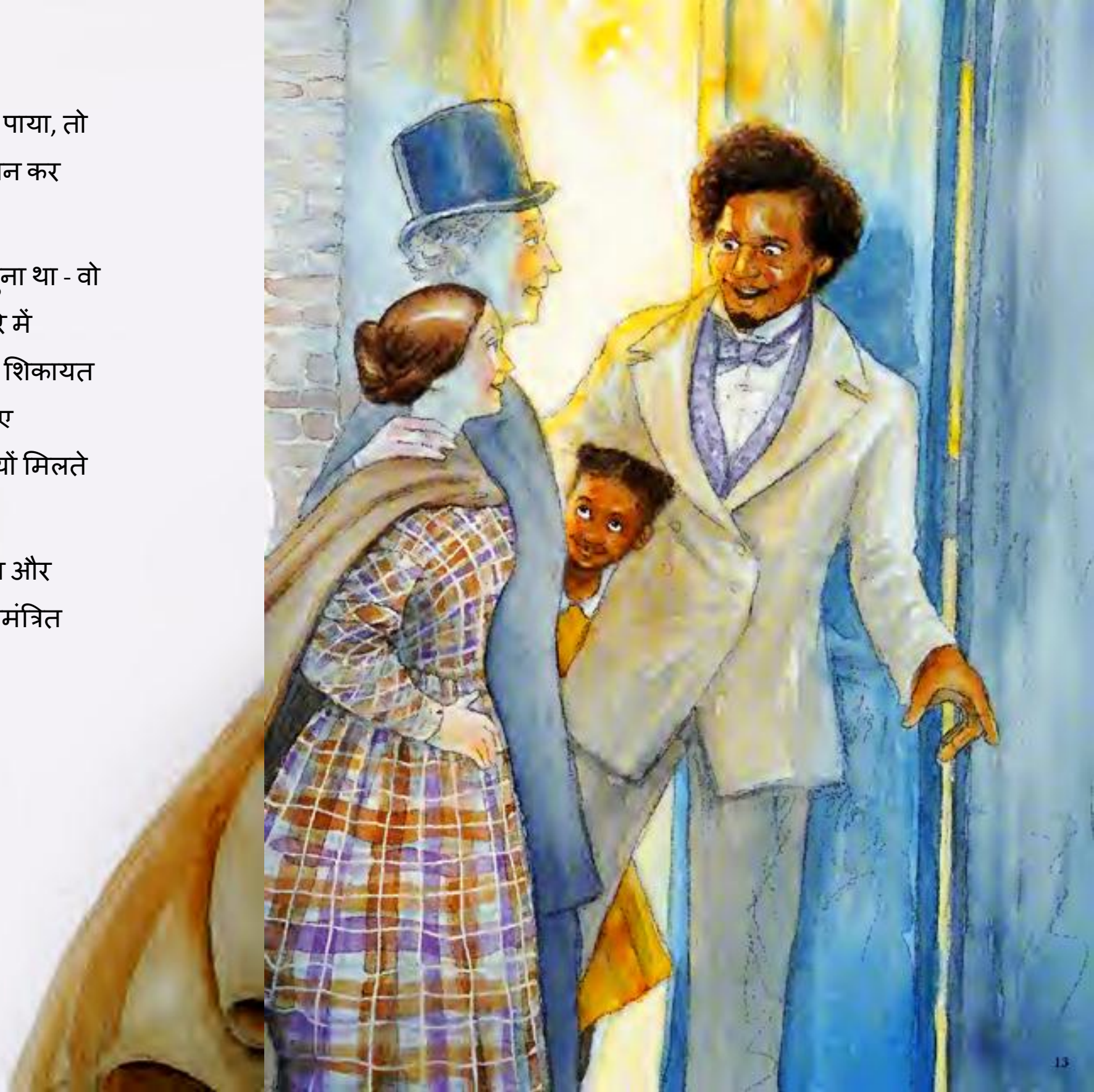
वो उस आदमी से मिलने को बेहद उत्सुक थी जिसके बारे में उसके पिता ने उसे इतनी सारी बातें बताई थीं - उसने गुलामी से बचने का साहस किया था, उसने समानता के बारे में भाषण दिए, और महिलाओं के अधिकारों के लिए खड़ा हुआ था.



जब फ्रेडरिक ने सुसान को अपने दरवाजे पर पाया, तो उसकी मुस्कान ने पूरी अलेक्जेंडर स्ट्रीट को रोशन कर दिया.

फ्रेडरिक ने सुसान के बारे में भी बहुत कुछ सुना था - वो एक बहादुर महिला थीं जिन्होंने समानता के बारे में शक्तिशाली भाषण दिए थे. उस दबंग महिला ने शिकायत की थी कि पुरुष शिक्षकों को, समान-काम के लिए महिलाओं की तुलना में चार गुना ज़्यादा पैसे क्यों मिलते थे?

इससे पहले कि आप "सभी के लिए स्वतंत्रता और न्याय" कह सकें, फ्रेडरिक ने सुसान को अंदर आमंत्रित किया और बेहतरीन चाय बनाई.



जैसे-जैसे चाय ठंडी हुई, उनकी बातचीत गरमाई.
उन दोनों को गुलामी से नफरत थी और वे सोचते थे कि एक
व्यक्ति को कभी दूसरे का मालिक नहीं होना चाहिए.
वे मानते थे कि महिलाओं को पुरुषों के समान ही, अधिकार
मिलने चाहिए - भूमि की मल्लिक्यत में, कॉलेज की पढ़ाई में
और वोट देने में.

वे अपने विश्वासों के लिए निडर होकर खड़े रहते थे.
असल में, उन्हें एक अच्छी लड़ाई लड़ना पसंद थी!

इसलिए वो दोनों दोस्त बने और उन्होंने-अफ्रीकी
अमेरिकियों और महिलाओं के समान अधिकारों के लिए
एक साथ मिलकर लड़ाई लड़ी.

लेकिन क्या वो अजीब दोस्ती टिकाऊ थी?



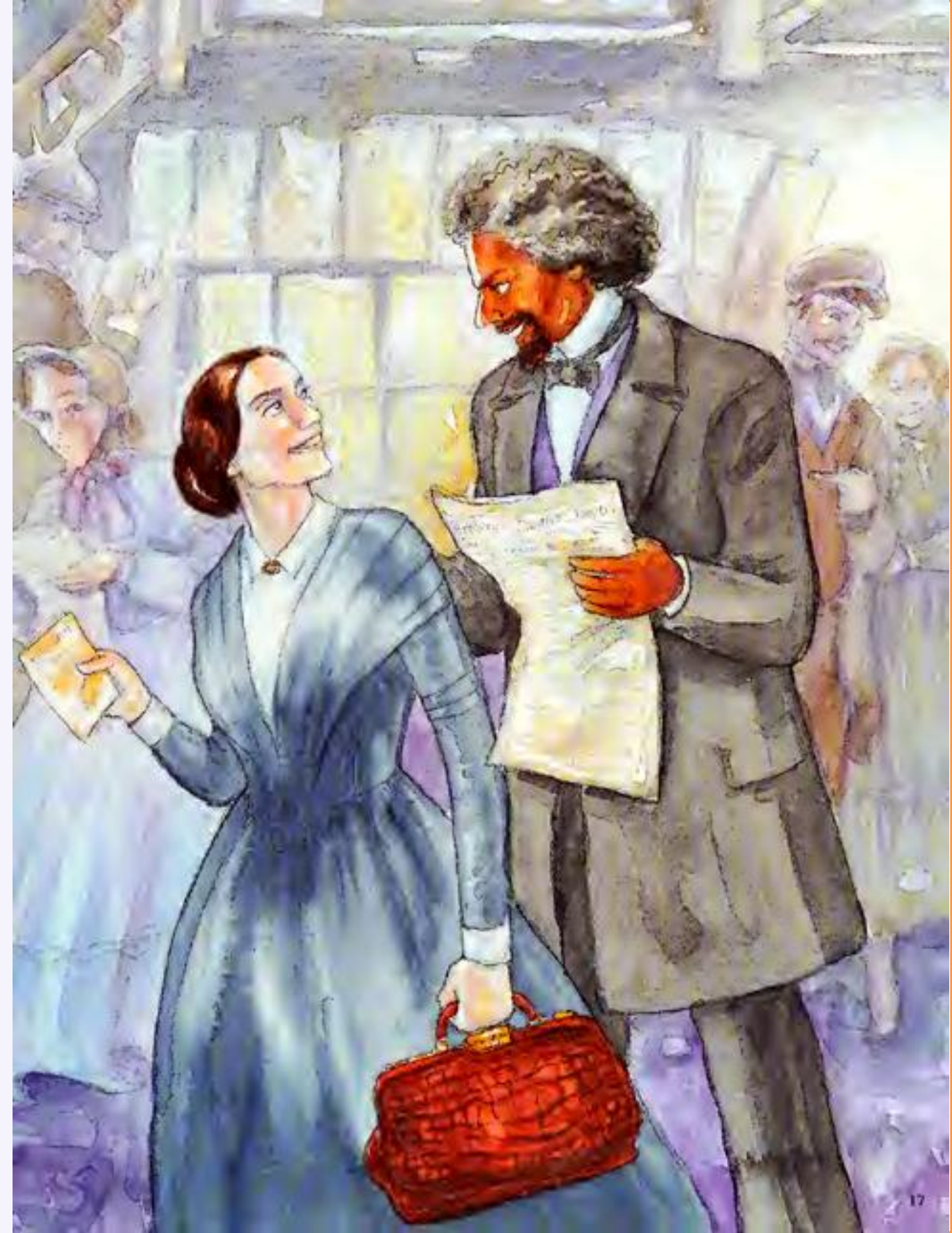
उनकी दोस्ती तब भी कायम रही जब दूसरे लोग उन पर हंसे.

जब वे एक-साथ बाहर गए तो लोगों ने उन्हें ताने मारे और सुसान और फ्रेडरिक का मजाक उड़ाया.

गोरे और अश्वेतों को एक-दूसरे का दोस्त नहीं होना चाहिए था! एक अश्वेत पुरुष और एक श्वेत महिला को पब्लिक में एक-साथ दिखाई देना सही नहीं माना जाता था.

लेकिन सुसान और फ्रेडरिक ने लोगों के कहे की परवाह नहीं की. लोगों ने उनके मुंह पर और उनकी पीठ के पीछे भी बहुत कुछ कहा.

चाहे कुछ भी हो, वे एक-दूसरे के दोस्त बने रहे.





उनकी दोस्ती तब भी कायम रही जब लोगों ने उन पर सड़े अंडे फेंके.

सुसान और फ्रेडरिक ने लोगों से अपने विचारों को साझा करने के लिए आस-पास के शहरों का दौरा किया.

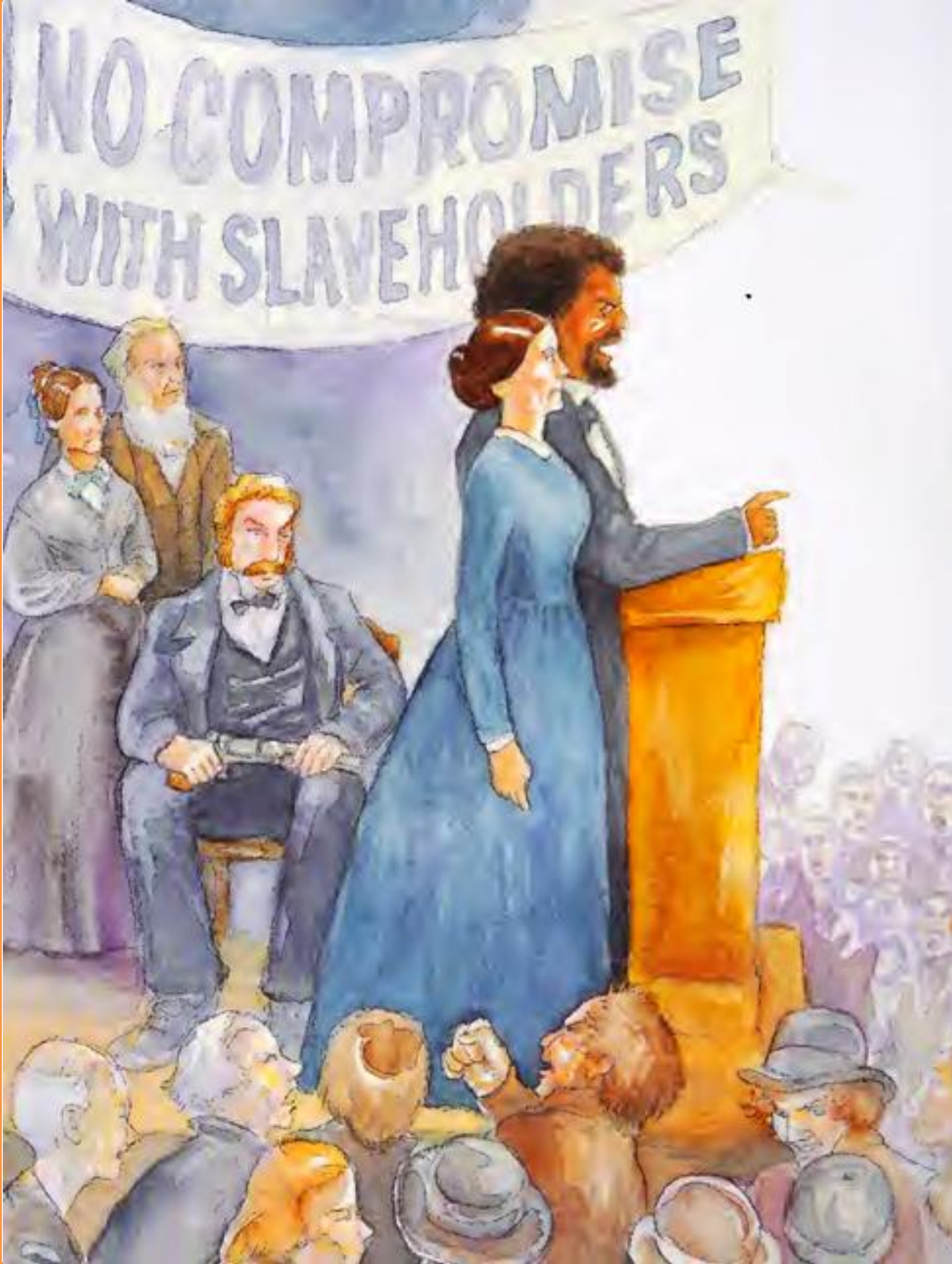
"हर कोई समान व्यवहार का हकदार है!" उन्होंने घोषित किया.

लेकिन उन्हें बहुत से शत्रु भी मिले—लोग उन्हें रोकने के लिए कुछ भी करने को तैयार थे.

अखबारवालों ने उनको लेकर बेहूदा और गंदी कहानियां लिखीं - कि सुसान और फ्रेडरिक एक भयानक बीमारी जैसे थे. "एक घातक चेचक! एक भयानक प्लेग!"

गुस्साई भीड़ ने उन पर सड़े अंडे फेंके. "तुम दोनों पागल हो, और तुम्हारे विचार भी बकवास और बेतुके हैं!"

लेकिन दोनों दोस्तों को कोई भी रोक नहीं सका.



उनकी दोस्ती तब भी कायम रही जब खतरा उनके बहुत नजदीक आया.

1861 में सुसान और फ्रेडरिक गुलामी के खिलाफ बोलने के लिए न्यूयॉर्क की राजधानी अल्बानी गए.

सौ से अधिक लोगों ने उन्हें शहर से बाहर रखने के लिए एक याचिका पर हस्ताक्षर किए "वे कट्टरपंथी दंगे कराएंगे!" लोग चिल्लाए. "वे हमारे अच्छे शहर को शर्मिंदा करेंगे."

लेकिन फिर भी दोनों आए, और वे अपने साथ अन्य वक्ता भी लाए.

उस दिन सभा भवन खचाखच भरा हुआ था. ज्यादातर लोग सुनने के लिए नहीं आए थे. वे वक्ताओं को डराने-धमकाने के लिए आए थे.

"मैं कोई परेशानी, दंगा-फसाद नहीं चाहता," मेयर ने सबके सामने अपनी गोद में बंदूक रखकर लोगों को चेतावनी दी.

सुसान और फ्रेडरिक ने उग्र, क्रोधित भीड़ का बहादुरी से सामना किया. उनके चारों ओर भयानक मारपीट शुरू हो गई.

पर इस सब के बीच दोनों दोस्त बोलते रहे.





उनकी दोस्ती तब भी कायम रही जब लोगों का गुस्सा भड़का.

चार साल बाद, तेरहवें संशोधन ने अंत में गुलामी को समाप्त किया. सुसान और फ्रेडरिक ने जश्न मनाया, और फिर काम पर वापस गए.

1869 में अखबारों की सुर्खियों ने देश को झकझोर दिया: पन्द्रहवें संशोधन का नया प्रस्ताव अश्वेत पुरुषों को वोट देने का अधिकार देता था - लेकिन महिलाओं को नहीं.

देश में कोहराम मच गया. सभी ने कोई-न-कोई पक्ष लिया.

फ्रेडरिक रोमांचित था.

पर सुसान गुस्से में थी.

वे दोनों खुद एक लड़ाई में शामिल हुए - एक गज़ब की लड़ाई!

"अश्वेतों के लिए यह ज़िंदगी और मौत का सवाल है," फ्रेडरिक ने जोर देकर कहा.

"क्या महिलायें सारी ज़िंदगी वोट देने का इंतजार करती रहेंगी?" सुसान चिल्लाई.

उन्होंने ज़ोरदार बहस की और एक-दूसरे पर चिल्लाए. इससे भी बदतर - वे पब्लिक के सामने ज़ोर-ज़ोर से लड़े.

लेकिन सुसान और फ्रेडरिक एक दूसरे की बातों को सुनते रहे. समय के साथ, उन्हें महसूस हुआ असहमति के बावजूद वे फिर भी दोस्त बन सकते थे. फिर दोनों ने एक-दूसरे से लड़ना बंद कर दिया, और जल्द ही फिर से कंधे से कंधा मिलाकर लड़ने लगे.



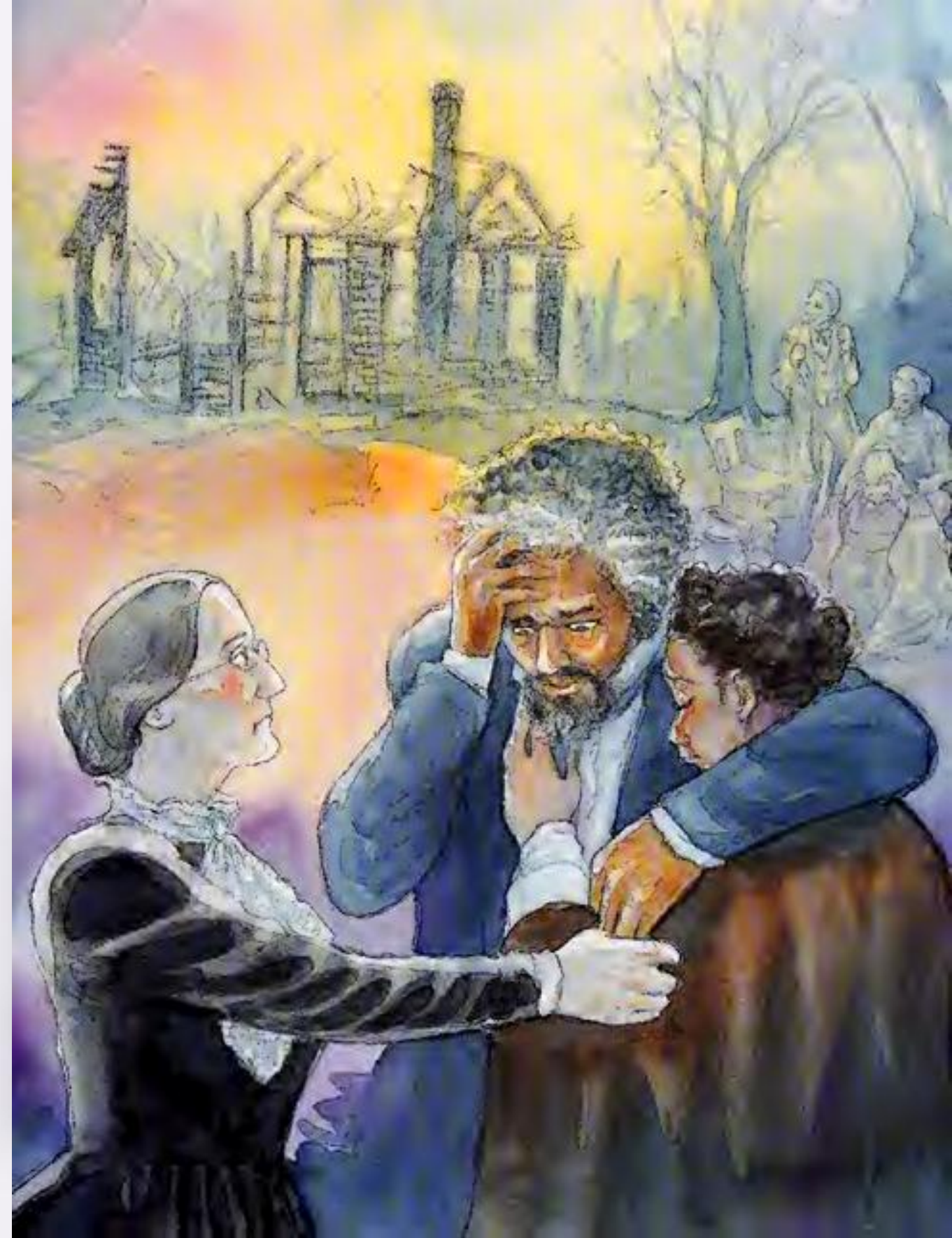
जब उनके घर में आग जली फिर भी उनकी दोस्ती कायम रही.

1872 में जब फ्रेडरिक किसी काम से बाहर गए तो दुश्मनों ने उनके घर में आग लगा दी. आगजनी करने वालों में वे लोग शामिल थे जो अपने शहर में अफ्रीकी-अमेरिकियों को रहने देना नहीं चाहते थे.

आग ने लगभग सब कुछ नष्ट कर दिया - फ्रेडरिक की किताबें, फर्नीचर और यहां तक कि फार्म के जानवर भी. फ्रेडरिक की पत्नी और बच्चे बमुश्किल अपनी जान बचाकर भागे.

जब फ्रेडरिक वापस रोचेस्टर पहुंचे, तो उन्होंने अपने परिवार को बेघर पाया. जली हुई ईंटों और राख के पास खड़े होकर, उन्होंने समानता की लड़ाई के लिए वाशिंगटन, डी.सी. जाने का फैसला किया - जहां कानून बनाए जाते थे.

"रुको," सुसान ने विनती की. सुसान को उम्मीद थी कि फ्रेडरिक उसी शहर में दुबारा घर बनाएंगे जहाँ सुसान और वो बीस सालों से एक-साथ रहे थे. लेकिन फ्रेडरिक ने शहर छोड़ने का अपना मन बना लिया था. फिर दोनों दोस्तों ने एक-दूसरे अलविदा कहा और संपर्क में रहने का वादा किया.



उनकी दोस्ती तब भी कायम रही जब वे अलग-अलग शहरों में रहे.

सैकड़ों मील अलग रहने के बाद सुसान और फ्रेडरिक ने एक-दूसरे को लंबे-लंबे पत्र लिखे.

"मेरे प्यारे पुराने दोस्त," सुसान के पत्र इस वाक्य से शुरू हुए.

"हमेशा पुरुष और महिला की स्वतंत्रता में आपका साथी," फ्रेडरिक ने वापस लिखा.

वे एक-दूसरे के बारे में अखबारों में पढ़ते थे. उन्होंने तमाम जगहों पर एक साथ भाषण दिए. वे अलग-अलग राज्य सम्मेलनों में एक-दूसरे से मिले. और उनकी दोस्ती हमेशा की तरह मजबूत रही.

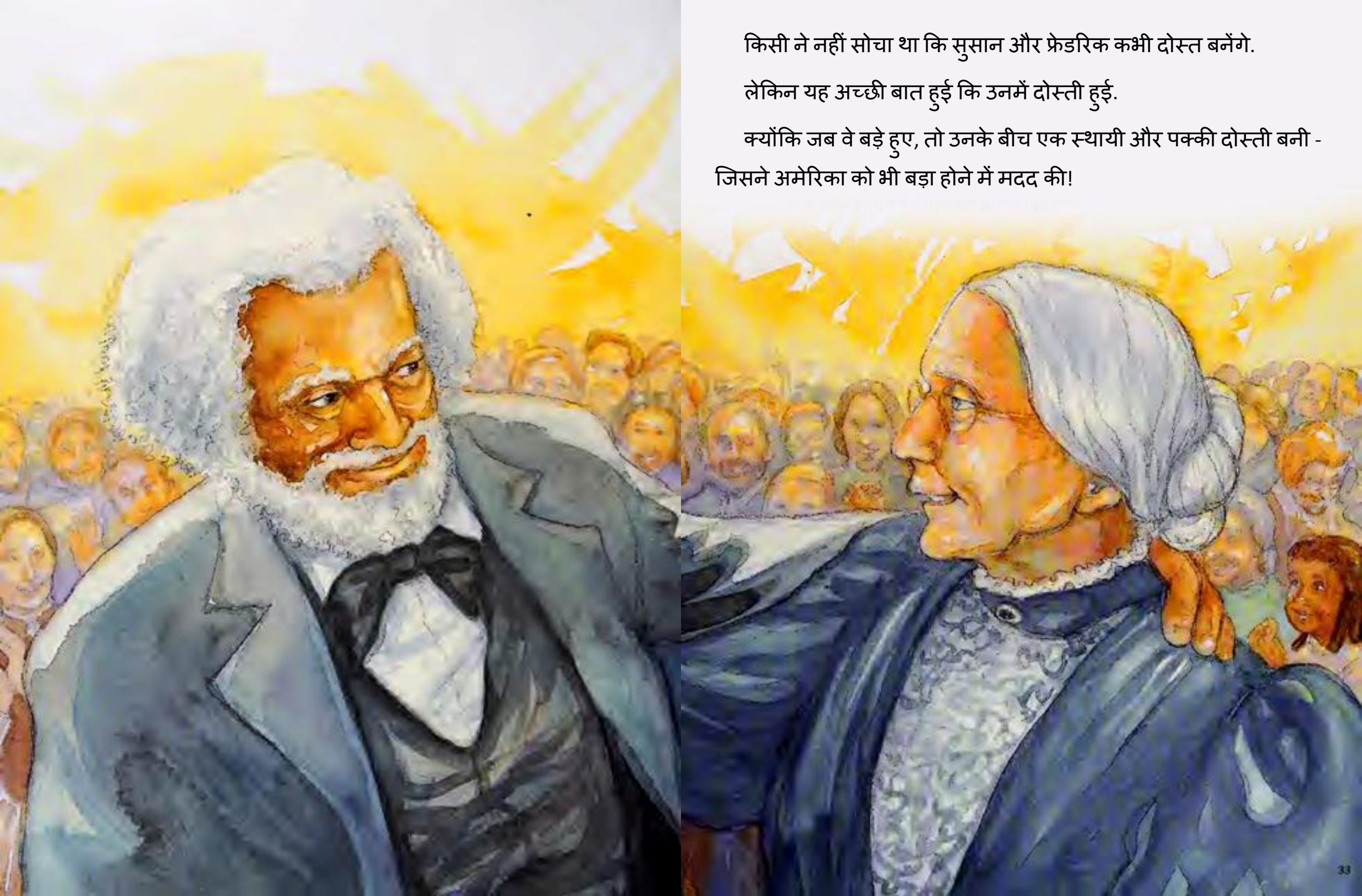


उनकी दोस्ती पैंतालीस साल से अधिक चली!

अच्छे और बुरे समय में भी, सुसान और फ्रेडरिक पक्के दोस्त बने रहे. दोनों ने मिलकर अपने कई सपनों को सच होते देखा. अफ्रीकी-अमेरिकी पुरुष गर्व से वोट देने वाली लाइन में खड़े हुए - महिलाओं ने अपना बोरिया-बिस्तर बाँधा और कॉलेजों में पढ़ने गईं. अफ्रीकी-अमेरिकियों और महिलाओं ने वो काम किए जो कभी केवल गोरे पुरुष ही करते थे.



किसी ने नहीं सोचा था कि सुसान और फ्रेडरिक कभी दोस्त बनेंगे.
लेकिन यह अच्छी बात हुई कि उनमें दोस्ती हुई.
क्योंकि जब वे बड़े हुए, तो उनके बीच एक स्थायी और पक्की दोस्ती बनी -
जिसने अमेरिका को भी बड़ा होने में मदद की!



लेखक का नोट

सुसान और फ्रेडरिक की दोस्ती ने कई लोगों को चौंका दिया और उस मित्रता को कई चुनौतियों का भी सामना करना पड़ा. लेकिन इसके बावजूद दोनों एक-दूसरे के प्रति सम्मान और अपने विश्वासों के कारण दोस्त बने रहे कि सभी के लिए समान अधिकारों की लड़ाई लड़ते रहे.

अधिकांश दोस्तों की तरह, सुसान और फ्रेडरिक को एक साथ काम करने में मज़ा आया. लेकिन वे अपने-अपने अन्य कामों में भी व्यस्त थे. दोनों ने समान अधिकारों को बढ़ावा देने के लिए एक समाचार पत्र शुरू किया. दोनों बढ़िया वक्ता थे जिन्होंने समानता के संदेश को फैलाने के लिए देश भर में यात्रा की.

सुसान और फ्रेडरिक को भाषण देते समय अक्सर विरोध का सामना करना पड़ा. 1861 में सुसान ने "नो कंप्रोमाइज विद स्लेव-होल्डर्स" स्पीकिंग टूर का आयोजन किया, और न्यूयॉर्क की यात्रा की. फ्रेडरिक, अल्बानी में नागरिक अधिकार नेताओं एलिजाबेथ कैडी स्टैंटन, ल्यूक्रेटिया मॉट, मार्था राइट और गेरिट स्मिथ के साथ दौरे में शामिल हुए. अल्बानी के मेयर ने अपनी गोद में रिवाल्वर रखा और भीड़ को चेतावनी दी कि हॉल के चारों ओर सादे कपड़ों में पुलिसकर्मी तैनात हैं. लेकिन भीड़ ने ध्यान नहीं दिया, और सुसान और फ्रेडरिक ने खुद को दुबारा खतरे में पाया.

हालांकि कई लोगों ने सुसान और फ्रेडरिक का उपहास उड़ाया, पर कई अन्य लोगों ने उनके दृढ़ संकल्प में पक्का विश्वास किया. 1865 में न्यूयॉर्क के एक प्रसिद्ध समाचार पत्र, रोचेस्टर यूनियन ने "द विनिंग टिकट" नामक एक लेख प्रकाशित किया, जिसने सुसान और फ्रेडरिक का समर्थन किया: "हम मिस्टर डगलस को संयुक्त राज्य अमेरिका का राष्ट्रपति और मिस एंथनी उप-राष्ट्रपति बनते देखना चाहेंगे. उनकी एक मज़बूत टीम बनेगी."

20 फरवरी, 1895 को वाशिंगटन, डी.सी. में एक महिला अधिकार बैठक में सुसान और फ्रेडरिक का एक-साथ अंतिम दिन था. हाथ में हाथ डाले, दोनों दोस्त गर्व से मंच पर खड़े होकर तालियां बजाते रहे. वे एक-दूसरे की बगल में बैठे, उन्होंने दोपहर भर एक-दूसरे की कंपनी का आनंद लिया. उस रात फ्रेडरिक को दिल का दौरा पड़ा और घर में ही उनकी मृत्यु हो गई. न्यूयॉर्क टाइम्स के एक मृत्युलेख में सुसान सहित उनके जीवन के महत्वपूर्ण पहलुओं का उल्लेख किया गया : मिस एंथनी और मिस्टर डगलस में एक घनिष्ठ मित्रता थी ... और यह दोस्ती कई दशकों तक जारी रही." कुछ दिनों बाद सुसान को अपने जीवन का सबसे कठिन भाषण देना पड़ा - फ्रेडरिक के अंतिम संस्कार के समय

"श्रद्धांजलि - और पैंतालीस साल के अपने दोस्त को अलविदा कहना पड़ा. ग्यारह साल बाद 86 साल की उम्र में सुसान का निधन हो गया. लेकिन सुसान और फ्रेडरिक के समान अधिकारों के सपने मर नहीं. उनकी कड़ी मेहनत ने भविष्य के कानूनों को आकार देने में मदद की, जिसने अंततः 1920 में महिलाओं को वोट देने का अधिकार दिया.



रोचेस्टर में फ्रेडरिक डॉगलस और सुसान बी. अन्थोनी के कांस के बने दो बड़े पुतलों का एक स्मारक है जिसका नाम है "लेट्स हैव टी" (चलो चाय पियें).

हज़ारों लोग रोज़ाना यहाँ आते हैं

और दोनों नागरिक अधिकार योद्धाओं की याद को ताज़ा करते हैं.